IJAER/ March-April 2024/Volume-13/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Researc
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

आत्माभिव्यक्ति का कलाकार : प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल

रीना सिंह
शोधार्थिनी
मोनाड विश्वविद्यालय,
हापुड (उ0प्र0)

डॉ0 आशीष गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय,हापुड

आज के वर्तमान समय में कला सिर्फ देखने–दिखाने और घर सजाने की वस्तु नहीं रह गई है बल्कि वह गहन अध्ययन और सूक्ष्म पर्यवेक्षण की माँग करती है। किसी भी चित्र को समझने के लिए उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा। आज की कला दर्शक से निष्ठा एवं तन्मयता की अपेक्षा रखती है। ये तथ्य प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल के चित्रों के सम्बन्ध में ज्यादा प्रासंगिक हो जाते हैं क्योंकि प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल समकालीन चित्रकला के इतिहास में अपने चित्रों के रूप तथा उनमें अभिव्यक्त विचार दृष्टि के लिए प्रसिद्ध चित्रकार हैं, उन्होंने अपने चित्रों में नए प्रयोग किए तथा अपने विचारों तथा मनोभावों को अपने रेखाचित्रों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने चित्रों को व्यवसाय बनने से बचाए रखा। उनका कहना था कि मैने कला को व्यापार से सदा अलग माना है। व्यापार के लिए मैं चित्र नहीं बनाता इसलिए मैं 'पेटेन्ट' चीजें नहीं दे पाता। आज कला एक कमोडिटी है, उसे बेचा जा सकता है ''यह कला के क्षेत्र में एक दुर्घटना है।'' भारत में उत्तर प्रदेश के जिला बस्ती के हरैया तहसील के छोटे से गांव शुक्लपुर में 1 मार्च 1925 में प्रो. रामचन्द्र शुक्ल का जन्म हुआ। बचपन से ही उन्हें चित्र बनाने में रूचि थी। 1943 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में इन्होंने बी.ए. में प्रवेश लिया और इसी दौरान इन्हें श्री सुखवीर सिंघल व आचार्य क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार का सानिध्य प्राप्त हुआ। जिनकी प्रेरणा व प्रोत्साहन से उनका मन चित्रकला की ओर निष्ठापूर्वक झुक गया तथा इन्होंने वाश पद्धति में अनेक चित्र बनाएं। किन्तु कुछ समय पश्चात् प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल यामिनी राय तथा अमृता शेरगिल की कला से विशेष रूप से प्रभावित हुए। इन दोनों कलाकारो की कलाकृतियों, इनकी विधि, रूपांकन, रंग योजना आदि का इन्होंने विशेष अध्ययन किया और अपनी चित्रण शैली में नवीन प्रयोग किए। प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल द्वारा बनाएं गए रेखांकन भारतीय आधुनिक कला में क्रान्तिकारी बदलाव लेकर

आए। भारतीय कला आरंभ से ही रेखा प्रधान रही है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक रेखांकनो के प्रत्यक्ष उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। रामचन्द्र शुक्ल की कला यात्रा में अनेक महत्वपूर्ण पड़ावों ने अपना स्थान बनाया है जिनमें से एक है कलम एवं स्याही से इनके द्वारा बनाए गए रेखा चित्र। इन्होंने चित्रों के सृजन में कभी भी सोच–समझकर या ले आउट बनाकर चित्रण नहीं किया बल्कि मन में उठने वाले विचारों को ज्यों का त्यों रेखाचित्रों के माध्यम से सृजित किया। इनके चित्रों में हमें अमूर्त व सूक्ष्मवादी प्रभाव के दर्शन होते हैं। प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल एक चिन्तनशील कलाकार थे। स्वयं को जानने की ललक, पहचानने की बैचेनी, आत्मशोध का भाव आदि प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल के चित्रों में अभिव्यक्त होता रहा है। इनके द्वारा बनाएं गए चित्र उदाहरणस्वरूप प्रतीक्षा, दो बहने, वैराग्य, जल जीवन, प्लास्टिक के मकान आदि चित्रों में आत्माभिव्यक्ति के भाव दिखाई देते हैं। आरम्भ के दिनों में प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल ने वाश पद्धति में कार्य किया किन्तु इस पद्धति में ये स्वयं को बन्धनयुक्त अनुभव करते थे। अतः इन्होंने अपने चित्रण का रूख सरल रेखाचित्रों की ओर मोड़ लिया। उन्मुक्त रेखाओं के द्वारा वह अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति सरल रूप से करना आरम्भ कर दिया। इन्होंने अपना ध्यान बड़े कैनवास की जगह सफेद कागज पर स्याही व पेन से बनने वाले चित्रों की तरफ केन्द्रित किया। इसके साथ ही ये कलाकार यामिनी राय तथा अमृता शेरगिल की कला से भी प्रभावित हुए। यामिनी राय की लोक कला शैली से प्रभावित होकर रामचन्द्र शुक्ल ने लोक शैली की टेंपरा तकनीक में सामाजिक विषय वस्तु को लेकर चित्र रचना प्रारम्भ की। अमृता शेरगिल ने भारत के प्रताड़ित व गरीब लोगों का चित्रण किया जो उस समय भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में नया विषय था। प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल को अमृता शेरगिल की चित्रकला ने मौलिकता की ओर रूख करने के लिए प्रोत्साहित किया। यही कारण है कि हम प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल की चित्रकला में कलाकार यामिनी राय व अमृता शेरगिल की चित्रशैलियों की झलक देख सकते हैं।

समकालीन भारतीय चित्रकला में प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल का अद्वितीय स्थान है। लेखकों की तलवार 'कलम' तथा कलाकारों का हथियार 'ब्रश' दोनों क्षेत्रों पर अमिट छाप छोड़ने वाले प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल एक प्रयोगवादी कलाकार थे। साथ ही उनकी सरलता, मौलिकता तथा समाज के प्रति उनका चिन्तन स्वतः ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर लेती है। उनकी कला में निरन्तर परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने कभी भी किसी एक शैली में बंधकर कार्य नहीं किया अपितु अपने हर चित्र में वे नवीन प्रयोग

करते रहे। उन्होंने वॉश शैली, काशी शैली, आधुनिक कला, प्रकृति चित्रण व रेखांकनों आदि में बड़ी संख्या में चित्रण किया।

प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल ने कला से सम्बन्धित अनेक पुस्तके व लेख लिखें। उनकी प्रमुख पुस्तकों में 'शिल्प लोक', 'रेखावली', कला और आधुनिक प्रवृत्तियां, 'कला प्रसंग,'कला दर्शन' आदि हैं। उनकी ये पुस्तकें देश की भावी कला प्रगति का दिशा निर्देशन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं। प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल सिद्धहस्त व मौलिक कलाकार होने के साथ ही कला समीक्षक, कला मर्मज्ञ, कला निर्देशक, लेखक व कला आचार्य आदि भूमिकाओं का निर्वहन बहुत ही श्रेष्ठ रूप में किया। उन्होंने कला को हमेशा एक सच्चे तपस्वी की तपस्या की तरह शुद्ध रखा। उसे धन संचय या ख्याति प्राप्त करने का मार्ग नहीं बनाया। उन्होंने विचार तथा सृजन के दोनों स्तरों पर भारतीय कला जगत को समृद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके कारण भारतीय कला जगत सदैव उनका ऋणी रहेगा।

प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल के चित्रों का मूल्यांकन :–

प्लास्टिक के मकान (चित्र फलक सं0–01)

इस आधुनिक कलाकृति का सयोजन वृत्ताकार व आयताकार पिण्डनुमा आकारों द्वारा किया गया है, चित्र की पृष्ठभूमि को लाल व काले रंगों का प्रयोग कर संतुलित किया गया है। मुख्य आकृति में हल्के पीले, सफेद, भूरे और हल्के नारंगी रंग के प्रयोग से इस प्रकार संयोजित किया गया है कि स्वतः ही लयात्मकता का आभास होने लगता है। चित्र की सरंचना व सगठित रूपाकारो को देखकर किसी मूर्तिशिल्प या स्थापत्य का भाव दृष्टिगत हो रहा है, जो कि अर्थ पारदर्शी होने के कारण कठोर व ठोस न हो कर कोमलता व लचीलेपन का आभास करा रहे है।

जल जीवन (चित्र फलक सं0–02)

इस कलाति की पृष्ठभूमि सपाट हल्के नीले रंग की है और उस पर कुछ आकृतियों का लयात्मक संयोजन है। पृष्ठभूमि में सफेद रंग की हल्की एवं पतली क्षैतिज रेखा द्वारा जल के समान प्रवाह व लयात्मकता का बड़ी ही सुन्दरता से आभास कराया गया है, जो कि समस्त आकृतियों के जलमग्न होने का बोध करा रही है। वर्णविन्न्यास सरल व सौम्य है। काले, पीले, भूरे, सफेद और नारंगी रंग की विभिन्न तानों का प्रयोग कर छोटे व बड़े रूपाकारों का अंकन किया गया है। चित्र कलाकार की विलक्षण कल्पनाशीलता का घोतक है।

पनघट से आती महिला (चित्र फलक सं0–03)

इस रेखांकन में एक महिला को घर की ओर जाते हुए दर्शाया गया है। महिला के अंग प्रत्यंग लयात्मक ढंग से रेखांकित हैं। उसके वस्त्रों का भी लयपर्ण ढंग से इस प्रकार अंकन किया गया है, जिससे एक–एक सलवटें भी सुन्दरता से उभर कर सामने आ रही है। पोत युक्त आकाश में कुछ पक्षी उड़ते हुए दर्शित हो रहे है। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह भी अपने घर की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। इसमें गत्यात्मक प्रभाव को अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण ढंग से निरूपित किया गया है।

अलंकृत सरस्वती (चित्र फलक सं0–04)

यह एक विद्वचित्र है। अर्थात विद्वचित्र वो होता है जो दर्पण में पड़ी परछाई के समान वास्तविक वस्तु से मिलता हो। इसमें अलंकरणों से सजी हुईसरस्वती का चित्रण है। यद्यपि पौराणिक चिन्न शैली के आधार पर इस चित्र की रचना की गई है किन्तु इसमें भी कलाकार ने अपनी प्रतिभा द्वारा नवीन प्रयोग किया है।

भारतीय संस्कृति में ''कमल'' और ''हँस'' ग्रह की समृद्धि के हेतु माने जाते है। लताबन्ध और अभ्यारण्य मांगल्यप्रव होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, डॉ0 राकेश कुमार, ''चित्रकार प्रोफेसर रामचन्द्र की कलात्मक प्रतिमा''
2. शर्मा, रजनी, ''रामचन्द्र शुक्ल एक खोज,'' 2015
3. गैरोला, वाचस्पति, '' भारतीय चित्रकला''
4. वाजपेयी, राजेन्द्र, ''मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार,'' साहित्य निकेतन, कानपुर, 1981
5. वर्मा, सुरेन्द्र, ''सांस्कृतिक प्रलेखन प्रो0 राम चन्द्र शुक्ल'', उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद, 2007
6. वर्मा, लक्ष्मीकान्त, ''इलाहाबाद के चित्रकार,'' इलाहाबाद, 2000
7. वर्मा, अविनाश बहादुर, ''भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 1968

8. भारद्वाज, विनोद, ''बृहद आधुनिक कला कोश''

9. अग्रवाल, डॉ0 गिरिराज किशोर, ''कला और कलम''

चित्र–फलक

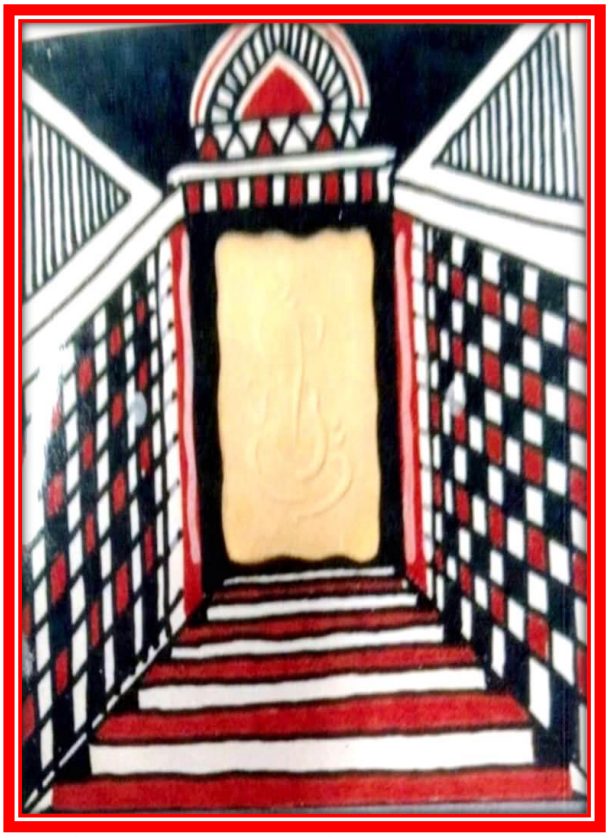

चित्र सं0–01 : प्लास्टिक का मकान

चित्र सं0–02 : जल जीवन

चित्र सं0–03 : पनघट से आती महिला

चित्र सं0–04 : अलंकृत सरस्वती